

---

## Dakshinakalika Kavacham 3

---

# दक्षिणकालिकाकवचम् ३

---

### Document Information



---

Text title : Dakshinakalika Kavacham 3

File name : dakShiNakAlikAkavacham3.itx

Category : devii, devI, kavacha

Location : doc\_devii

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shyAmArahasyam | chaturthaH parichChedaH ||

Latest update : March 19, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 19, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

## दक्षिणकालिकाकवचम् ३



(श्यामारहस्ये)

भैरव उवाच ।

कालिका या महाविद्या कथिता भुवि दुर्लभा ।  
तथापि हृदये शल्यमस्ति देवि ! कृपां कुरु ॥ १ ॥

कवचन्तु महादेवि ! कथयस्वानुकम्पया ।  
यदि नो कथ्यते मातर्विमुञ्चामि तदा तनुम् ॥ २ ॥  
देव्युवाच ।

शङ्कापि जायते वत्स ! तव स्नेहात् प्रकाश्यते ।  
न वक्तव्यं न दातव्यमतिगुह्यतरं महत् ॥ १ ॥

(ॐ) कालिका जगतां माता शोकदुःखविनाशिनी ।  
विशेषतः कलियुगे महापातकहारिणी ॥ २ ॥

कालौ मे पुरतः पातु पृष्ठतश्च कपालिनी ।  
कुल्ला मे दक्षिणे पातु कुरुकुल्ला तथोत्तरे ॥ ३ ॥

विरोधिनी शिरः पातु विप्रचित्ता च चक्षुषी ।  
उग्रा मे नामिकां पातु कर्णौ चोग्रप्रभा तथा ॥ ४ ॥

वदनं पातु मे दीप्ता नीला च चिबुकं तथा ।  
घना ग्रीवां सदा पातु वलाका बाहुयुग्मकम् ॥ ५ ॥

मात्रा पातु करद्वन्द्वं वक्ष्यो मुद्रा सदावतु ।  
मिता पातु स्तनद्वन्द्वं योनिमण्डलदेवताः ॥ ६ ॥

ब्राह्मी मे जठरं पातु नाभिं नारायणी तथा ।  
ऊरू माहेश्वरी पातु चामुण्डा पातु लिङ्गकम् ॥ ७ ॥

कौमारी च कटिं पातु जङ्घायुग्मं तथैव च ।

अपराजिता च पादौ मे वाराही पातु चाङ्गुली ॥ ८ ॥

सन्धिस्थानं नारसिंही पत्रस्था देवताऽवतु ।

रक्षाहीनञ्च यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ ९ ॥

तत्सर्वं रक्ष मे देवि ! कालिके घोरदक्षिणे ! ।

ऊर्ध्वमधस्तथा दिक्षु पातु देवी स्वयं वपुः ॥ १० ॥

हिंसेभ्यः सर्वदा पातु साधकञ्च जलाधिकात् ।

दक्षिणा कालिका देवी व्यापकं मे सदावतु ॥ ११ ॥

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेद्धोरदक्षिणाम् ।

न पूजाफलमाप्नोति विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥ १२ ॥

कवचेनावृतो नित्यं यत्र तत्रैव गच्छति ।

तत्र तत्राभयं तस्य न क्षोभं विद्यते क्वचित् ॥ १३ ॥

इति श्यामारहस्ये देवीभैरवसंवादे तन्त्रान्तरोक्तं दक्षिणकालिकाकवचं सम्पूर्णम् ।

- ॥ श्यामारहस्यम् । चतुर्थः परिच्छेदः ॥

- .. shyAmArahasyam . chaturthaH parichChedaH ..

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

*Dakshinakalika Kavacham 3*

pdf was typeset on March 19, 2025

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

